भारतीय विद्यालय अल वादी अल कबीर -2026-27

कक्षा-10	विभाग: हिंदी	दिनांक -10.05.26
QB	मनुष्यता -मैथिलीशरण शरण गुप्त	Write the Q&A in your Hindi Note Book.

नाम: ____________________ अनुभाग: ____________ अनुक्रमांक: _______________

1.कवि ने कैसी मृत्यु को 'सुमृत्यु' कहा है?

उत्तर: जो मनुष्य दूसरों के लिए अच्छे काम कर जाता है, उस मनुष्य को मरने के बाद भी लोग याद रखते हैं। कवि ने ऐसी मृत्यु को ही सुमृत्यु कहा है।

2.उदार व्यक्ति की पहचान कैसे हो सकती है?

उत्तर: जो आदमी पूरे संसार में आत्मीयता और भाईचारे का संचार करता है, जो पूरे संसार के लिए समानता और अखंडता का भाव रखता है, उस व्यक्ति को उदार माना जाता है। उदार व्यक्ति के बारे में सरस्वती बखानती है । स्वयं धरती भी उसके प्रति कृतार्थ भाव मानती है । उदार व्यक्ति की कीर्ति चारों ओर फैलती है । उदार व्यक्ति को समस्त सृष्टि पूजती है ।

3.कवि ने दधीचि, कर्ण आदि महान व्यक्तियों का उदाहरण देकर 'मनुष्यता' के लिए क्या संदेश दिया है?

उत्तर: राजा रंतिदेव ने स्वयं भूख से व्याकुल होते हुए भी अपने हाथ में पकड़ा हुआ भोजन का थाल भूखों को दे दिया था । ऋषि दधीचि ने देवताओं की रक्षा के लिए अपनी हड्डियाँ दे दीं । गांधार के राजा उशीनर ने शरणागत कबूतर की रक्षा के लिए अपने शरीर का मांस तक दान कर दिया था । कर्ण ने ब्राह्मण वेश में आए देवराज इंद्र को अपने शरीर का रक्षा-कवच (चर्म) दान में दे दिया था । कवि ने इन उदाहरणों के माध्यम से मनुष्यता को त्याग और दान का संदेश देना चाहता है ।

4.'मनुष्य मात्र बंधु है' से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: इन शब्दों से हमें यह शिक्षा मिलती है कि सभी मनुष्य हमारे भाई-बंधु हैं। कवि के अनुसार इस बात की समझ एक बहुत बड़ा विवेक है। मनुष्य-मनुष्य के बीच में जाति-धर्म, क्षेत्र, भाषा या रंग के आधार पर कोई भेद नहीं होता है । वस्तुतः हम सभी उसी परमपिता परमेश्वर की संतान हैं, जो सबके लिए एक है । अपने कर्मफल के अनुसार हम भले ही अलग-अलग दिखते हैं, परंतु हम सबकी अंतरात्मा एक जैसी है ।

5. कविता में पशु-प्रवृत्ति किसे कहा गया है?

उत्तर: स्वयं अपने लिए खाना और जीना तो पशु का स्वभाव है । जब मनुष्य सिर्फ अपने लिए जीता है तो वह स्वभाव पशु-प्रवृत्ति कहलाता है ।

6. कवि ने सबको एक होकर चलने की प्रेरणा क्यों दी है?

उत्तर: मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। मनुष्य का जीवन आपसी सहकारिता पर निर्भर करता है। इसलिए कवि ने सबको एक होकर चलने की प्रेरणा दी है। यदि हम सभी एक होकर चलेंगे तो जीवन-मार्ग में आने

वाली हर विघ्न-बाधाओं पर विजय पा लेंगे । जब सबके द्वारा एक साथ प्रयास किया जाता है तो वह सार्थक सिद्ध होता है । आपस में एक दूसरे का सहारा बनकर आगे बढ़ने से प्रेम व सहानुभूति के संबंध बनते हैं तथा परस्पर शत्रुता एवं भिन्नता दूर होती है ।

7. व्यक्ति को किस प्रकार का जीवन व्यतीत करना चाहिए? इस कविता के आधार पर लिखिए।

उत्तर: मनुष्य को दूसरों के लिए जीना चाहिए । इसी में सबका भला है। न तो मनुष्य को अपने पैसों पर घमंड करना चाहिए और न ही सनाथ होने पर क्योंकि यहाँ कोई भी अनाथ नहीं है । ईश्वर ही सबके परमपिता है । उसके रहते भला कोई अनाथ कैसे हो सकता है । ईश्वर संपूर्ण सृष्टि के नाथ हैं, संरक्षक हैं । वे अपने अपार साधनों से सबकी रक्षा और पालन करने में समर्थ हैं । वह प्राणी अत्यंत भाग्यहीन है, जो उस परमपिता के रहते हुए भी स्वयं को अधीर, अशांत और अतृप्त अनुभव करता है ।

8. 'मनुष्यता' कविता के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहता है?

उत्तर: मैथिलीशरण गुप्त जी ने मानव मात्र को निडरता, निस्वार्थता, उदारता, दान, त्याग, सहानुभूति, दया, अहंकारहीनता, सादगी, एकता, भाईचारा, दृढ़ता, साहस, प्रेम, परोपकार, सत्य, अहिंसा जैसे मानवीय गुणों को अपनाने का संदेश दिया है । मानव-जीवन एक विशिष्ट जीवन है । अतः अपने से पहले दूसरों की चिंता करते हुए अपनी शक्ति, अपनी बुद्धि और अपनी वैचारिक शक्ति का सदुपयोग करना मानव का कर्तव्य है । कवि ने हमें विभिन्न महापुरुषों जैसे रंतिदेव, दधीचि, उशीनर, कर्ण के अतुलनीय त्याग से प्रेरणा लेने का संदेश दिया है । हमें ऐसे सत्कर्म करने चाहिए जिससे मृत्यु उपरांत भी लोग हमें याद करें । निःस्वार्थ भाव से जीवन जीना, दूसरों के काम आना व स्वयं ऊँचा उठने के साथ-साथ दूसरों को भी ऊँचा उठाना ही 'मनुष्यता' का वास्तविक अर्थ है ।

9.भाव स्पष्ट कीजिए – "विरुद्धवाद बुद्ध का दया-प्रवाह में बहा, विनीत लोकवर्ग क्या न सामने झुका रहा?"

उत्तर: इस पंक्ति का भाव यह है कि महात्मा बुद्ध के युग में बलि-प्रथा का प्रचलन था । लोगों ने इसे धार्मिक कर्मकांड के रूप में स्वीकार कर लिया था, परंतु महात्मा बुद्ध ने इसका विरोध किया और प्राणिमात्र के प्रति अपार दया और करुणा के कारण अपने विरोधियों को भी क्षमा कर दिया । महात्मा बुद्ध की इसी उदारता, दया, करुणा आदि के सम्मुख सभी नतमस्तक हो गए और उनके अनुयायी बने ।

10. भाव स्पष्ट कीजिए – "अतर्क एक पंथ के सतर्क पंथ हों सभी ।"

उत्तर: कवि प्रस्तुत काव्य-पंक्तियों में हम मनुष्यों को प्रेरित करते हुए कह रहे हैं कि हमें सभी वाद-विवाद से परे होकर जीवन-पथ पर आगे बढ़ते जाना है । हम चाहे किसी भी पंथ, मत या संप्रदाय में दीक्षित हों, किंतु हमें सबको साथ लेकर चलना चाहिए ।